Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)
*** Vol-3* *Issue-1* *January 2026***
www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

रीता यादव
शोधार्थी शिक्षाशास्त्र, जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (फिरोजाबाद), उ0प्र0

शरद कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर–षिक्षाषास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, सिविल लाइन्स, कानपुर (उ0प्र0)

Article Info: *(Recieved- 15/11/2025, Accept- 20/12/2025, Published- 10/01/2026)*
DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i1005

सारांश

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है, विज्ञान ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। आज मानव विज्ञान के बल पर असीमित शक्ति का स्वामी बन बैठा है, विज्ञान मनुष्य के हाथ में अनुपम शक्ति है। इसके चमत्कारिक आविष्कारों का सहारा लेकर मानव ने बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान खोज निकाला है। आज असम्भव व काल्पनिक प्रतीत होने वाली सभी बातें सम्भव व हकीकत बन गई है। विज्ञान ने व्यक्ति को पूरी तरह अचम्भित कर दिया है। निज नई चीजों का अविष्कार उसके जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने में कोई कसर बाकी नहीं रख रहा है। लगता है जैसे पूरी दुनियाँ हमारे पास सिमट आई है, प्रकृति स्वयं मानव के ऊपर अपने प्राकृतिक खजाने को लुटाने में हर्ष अनुभव कर रही है। हर देश प्रगति के दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगा है। इतना सब कुछ होते हुए भी यह संकेत देना तर्क संगत है कि प्रत्येक देश की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है साथ ही ऑधी, तूफान, भूचाल, बाढ़ तथा नित नई बीमारियों ने भी व्यक्ति को अपने शिकंजे में घेर रखा है। विज्ञान के सम्मुख इस प्रकार की समस्याओं की हल करने की एक चुनौती हमेशा सामने खड़ी रहती है। प्रकृति का नियम ही संतुलन है, कुछ देकर, कुछ लेना भी है। इस दृष्टि से विज्ञान ने एक ओर जहाँ हमारे सामने असीमित साधन व सुविधायें उपलब्ध करायी है। वहीं दूसरी ओर उसने हमें असहनीय कष्टों व नित नई बीमारियों से जूझने के लिए अशक्त शक्ति छोड़ दिया है। बड़े–बड़े बाँध, विद्युत कल कारखाने, आधुनिक वैज्ञानिक सुविधायें और उपलब्धियाँ जहाँ किसी राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है, वहीं कहीं इससे भी अधिक आवश्यकता है उस मानव का निर्माण करना जो अपनी तुच्छ व दुर्बलताओं से आगे उठने की भावना से सम्पन्न हो और धन लोलुपता एवं स्वार्थपरता की भावना से मुक्त हो, जो समाज व राष्ट्र कल्याण तथा विश्वबन्धुत्व की भावना से युक्त हो, ऐसे मानव की रचना की एक मात्र आधारशिला है, और शिक्षा का उद्गम केन्द्र है– ''शिक्षक''। शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य–सहगामी क्रियायें, शैक्षिक उपकरण आदि महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, पर जब तक उनमें कुशल–शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति नहीं प्रदान की जायेगी तब तक वे निरर्थक हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका के विषय में कहा जाता है कि शिक्षक राष्ट्र का भाग्य विधाता होता है जो कि प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है क्योंकि शिक्षा का आधार शिक्षक ही है और पाठ्यक्रम को जीवन का अर्थ प्रदान करता है वह शिक्षा प्रणाली की आत्मा के रूप में होता है और समाज में ज्ञान का प्रकाश बिखरेता है। शिक्षक को समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपना कार्य सफल ढंग से सम्पादित कर सके।

शिक्षकों के विषय में कहा जाता है कि शिक्षक बनाये नहीं जाते हैं अर्थात् जो अध्ययन में मेधावी होते हैं वे अच्छा शिक्षण कार्य कर सकते हैं।

प्रस्तावना

शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम भावी शिक्षकों को अच्छा एवं प्रभावशाली बनाने का एक अच्छा ढंग है जिससे भावी पीढ़ी को इस प्रकार शिक्षित किया जा सके कि वह अच्छे एवं उत्पादक नागरिक बना सकें। वर्तमान प्रदेश देश में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के विभिन्न स्तरों में प्रवेश, एक बड़ी समस्या बना हुआ है। विश्वव्यापी 'सर्व–शिक्षा अभियान' के तहत इन वर्षों में पूरे देश में प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय तेजी से बड़ी संख्या में खोले गए हैं और खोले जा रहे हैं इस कारण से बड़ी संख्या में अध्यापकों की आवश्यकता आ पड़ी है। इस आवश्यकता पूर्ति के आशय से पूरे प्रदेश में, देश में बड़ी संख्या में अध्यापकों की आवश्यकता आ पड़ी है। इस आवश्यकता पूर्ति के आशय से पूरे प्रदेश में, देश में बड़ी संख्या में अध्यापक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम खोले गए हैं जिनमें बी.एड्. , बी.पी.एड्, डी.एल्.एड् आदि कक्षाओं में प्रशिक्षणार्थियों की कई गुना सीटें बढ़ी हैं, राज्य सरकारें और विश्वविद्यालय स्वयं इस दिशा में सक्रियता बरत रहे हैं। पर इन विभिन्न स्तरों पर प्रवेशार्थियों का चयन करते समय जिन मापदण्डों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है, प्रायः उनका अनुपालन कठिनाई से हो रहा है। प्रवेश हेतु चयन के लिये जहाँ पहले उपलब्धिगत सूचकांक को महत्त्व दिया जाता था वहाँ आज अधिकांशतः उसके स्थान पर प्रवेश–परीक्षा को महत्व दिया जा रहा है। प्रश्नपत्रों में प्रायः सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न रखे जा रहे हैं। विषयगत ज्ञानात्मक स्तरीय प्रश्नों को उतना महत्व नहीं दिया जा रहा है। फलतः यह परीक्षण यथारूपेण पूर्ण नहीं दिखायी पड़ता। इन परीक्षणों में भाषागत या अभिव्यक्तिपरक योग्यताओं के परिज्ञान हेतु यथेष्ट प्रयास नहीं दिखायी पड़ता। इसी भाँति इनमें शिक्षण–अभिवृत्ति, रुचि, अभिक्षमता आदि के सम्यक् ज्ञान हेतु कोई समीचीन प्रयास नहीं दिखायी पड़ता एवं विविध विद्यालय अध्यापन–विषयों में योग्यता–प्रशिक्षण हेतु समुचित प्रश्नों का निर्माण प्रवेश–परीक्षा प्रश्नपत्रों में प्रायः नहीं किया जाता तथा सामान्य मानसिक योग्यता एवं उसके आयामों को जानने के लिये किसी मानवीकृत परीक्षण का प्रयोग करना जरुरी नहीं माना जाता है। परिणामस्वरूप प्रवेश–परीक्षा मात्रा एक दिखावा बनकर रह गयी है।

प्रशिक्षु अध्यापक अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात् इस दशा में आ जाए कि वे अर्जित ज्ञान, अर्जित सम्प्रेषण कलाओं, उच्चारण की शुद्धता शिक्षण की अभियोग्यता तथा छात्राों के अवधन को अपनी ओर खींचने की कला में वांछित आधिकारिता से संयोजित हो जाए तथा ऐसी दक्षता से भी मण्डित हो जायें कि वे अधिगम शिक्षण कार्य में नवीनतम प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक व्यावहारिक प्रयोग कर सकें। शिक्षण–अभ्यास का आयाम इस दृष्टि से भी अभावग्रस्त है कि प्रायः प्रशिक्षु अध्यापक अपने अभ्यास पाठों की योजना बनाते समय न तो साफ–साफ तरीके से उनके विशिष्ट उद्देश्य लिखते हैं और न ही उनकी पाठ योजनाएँ शिक्षक–प्रशिक्षुओं द्वारा जाँची जाती है। उनके शिक्षण के आवर्ती निरीक्षण की व्यवस्था भी प्रायः विशेषज्ञ अध्यापकों द्वारा नहीं की जाती है। फल यह होता है कि प्रशिक्षुओं के शिक्षण व्यवहारों में वांछित सुधार नहीं हो पाता। परिणामतः आज की अध्यापक शिक्षा अनेकानेक शिक्षण अभ्यास संबंधी अभावों विसंगतियों से जकड़ी है। स्व–वित्तपोषित महाविद्यालयों द्वारा सम्पन्न की जाने वाली अध्यापक शिक्षा और उनके संस्थानों के शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम तो प्रायः मखौल की दशा को पहुँचे नजर आते हैं। इनका निराकरण प्रभावी गुणात्मक सुधार और पुर्नसंयोजन यथाशीघ्र किया जाना चाहिए।

वर्तमान कालीन भारत में अध्यापक शिक्षा संस्थानों में अनेक निर्देशों के बावजूद शिक्षक–प्रशिक्षण, अधिगम–विधियों, प्रविधियों में कोई उल्लेखनीय सुधर नहीं हो पाया है। वस्तुतः शिक्षण विधियाँ अध्यापक समुदाय को इस योग्य बनाती हैं कि वे अपनी कक्षाओं में क्यों, कैसे, क्या, कब, कितना आदि प्रश्नों का समाधन ढूँढ़ सकें। इसी भाँति प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षणार्थियों में मुख्यतया विभिन्न अभियोग्यताओं, कौशलों का विकास किया जाता है। अधिगम छात्रों में ज्ञान, क्रिया–कुशलताओं, प्रस्तुति–प्रविधियों, बोध–रसानुभुति आदि का विकास करता है। कतिपय विशिष्ट संस्थानों को छोड़कर, भारत के अधिकांश अध्यापक शिक्षा संस्थानों में इन बातों का आज भी यथेष्ट ध्यान नहीं रखा जाता है। छात्रों को अधिकांशतः व्याख्यान विधि के द्वारा ही पढ़ाया जाता है। शिक्षण में प्रायः परस्पर संवादी रणनीतियों विधियों का प्रयोग नहीं किया जाता जबकि संगोष्ठी पद्धति, समूह विमर्श विधि, कार्यशाला विधि, ट्यूटोरियल विधि, अनुरूपी विधि, खेल विधि आदि का प्रयोग भी आवश्यक है। इनका अनुप्रयोग प्रायः अधिक समय और अधिक संस्थानों की अपेक्षा करता है। आज के भारतीय शिक्षक–प्रशिक्षक संस्थान इनमें असमर्थ दिखाई देते हैं जिसका परिणाम गुणवत्ता में बराबर ह्रास होता परिलक्षित होता है। उत्तर प्रदेश समेत देश के अन्य कई राज्यों में ऐसा ही देखा जा रहा है जो निश्चय ही चिन्तनीय है।

कक्षा–व्यवहार में शिक्षक के लिए शाब्दिक सम्प्रेषण नितान्त आवश्यक है। कक्षा में निर्देश, कथन, व्याख्यान

तथा प्रस्तुतीकरण, छात्रों की प्रशंसा आदि के लिए शिक्षक भाषा का ही प्रयोग करता है। इस प्रकार शिक्षण प्रमुख रूप में शाब्दिक व्यवहार होता है। यद्यपि शिक्षक की आँखें, हाव–भाव, शारीरिक क्रियायें आदि अशाब्दिक व्यवहार भी कक्षा में प्रभावित करते हैं और यह भी कक्षा अन्तक्रिया में कम महत्वपूर्ण नहीं होते हैं। शिक्षा में आज शिक्षक–छात्र सम्बन्ध को अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया का एक मुख्य निर्णायक तत्व माना जाता है पर शिक्षक की पूर्ण सफलता इस बात में निहित होती है कि उसका स्वयं का वास्तविक जीवन में स्थिति व महत्व क्या है, विभिन्न पहलुओं के साथ उसकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कैसी है। अभिवृत्ति एक कल्पनात्मक शब्द है, क्योंकि इसको हम प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते। इसके प्रभावों का मात्र अनुभव किया जा सकता है। अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार का प्रतिबिम्ब होती है, व्यक्ति जैसा व्यवहार प्रदर्शन करता है वही उसकी अभिवृत्ति कहलाती है। अभिवृत्ति शब्द हमेशा से ही अनुसंधानकर्ताओं के लिए जिज्ञासा का शब्द बना हुआ है।

माइकल (1960) के अनुसार, अभिवृत्ति एक व्यक्ति की क्षमता है, काल्पनिक क्षमता की किसी कार्य के प्रदर्शन में शामिल व्यवहार के कुछ विशिष्ट और अधिक या कम अच्छी तरह से परिभाषित पैटर्न के अधिग्रहण के लिए, जिसके संबंध में व्यक्ति के पास बहुत कम या कोई पूर्व नहीं है। साधारण अर्थ में किसी वस्तु या व्यक्ति समूह के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल मनोभाव को अभिवृत्ति कहते है। शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार का सुधार लागू करने से पूर्व छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति यों के विषय में जानना अति आवश्यक होता है। ''यह एक चिर स्थायी, सम्प्रेरणाओं, संवेगों, प्रत्यक्ष एवं ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का संगठन है जो व्यक्ति के संसार के कुछ पक्षों के बारे में होता है।''– क्रेच एवं क्रेचफील्ड

अभिवृत्ति किसी वस्तु व्यक्ति अथवा उत्तेजना के प्रति हो सकती है। किसी भी व्यक्ति में धनात्मक (सकारात्मक दिशा में) तथा ऋणात्मक (नकारात्मक दिशा में) अभिवृत्ति का पाया जाना सम्भव होता है। अभिवृत्तियों में स्थिरता और निरन्तरता में कमी आती है। विषयवस्तु सम्बन्ध का होना अभिवृत्ति की प्रमुखता होती है अर्थात् प्रत्येक अभिवृत्ति में कम से कम एक विषय और एक वस्तु का होना आवश्यक होता है। जेम्स ड्रेवर (1968) के अनुसार–''अभिवृत्ति, मत, रूचि अथवा उद्देश्य की एक स्थाई तत्परता या प्रवृत्ति है जिसमें एक विशेष प्रकार के अनुभव की आशा और एक उचित प्रतिक्रिया की तैयारी निहित होती है।'' सीकोर्ड बैकमेंन (1964) के अनुसार–''अपने वातावरण के कुछ पक्षों के प्रति व्यक्ति के अनियंत्रित भाव, विचार व कार्य करने की पूर्व वृत्ति ही अभिवृत्ति कहलाती है।'' अभिवृत्ति व्यक्ति के अन्दर निहित वह गुण है जो किसी के प्रति व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से अभिव्यक्त करता है दूसरें अर्थ में हम कह सकते है कि जब व्यक्ति किसी समूह के प्रति अपने विचारों को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्ति करता है उसे अभिवृत्ति कहते है।

समायोजन से तात्पर्य वास्तविकता के धरातल पर विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं ढालने की प्रक्रिया है। समायोजन एक अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अन्दर उपस्थित गुणों को संगठित कर अपने जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करता है जो व्यक्ति स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढालकर सामंजस्य स्थापित कर लेता है, वह व्यक्ति अपनी योग्यता व उपलब्धि का सही प्रदर्शन कर पाता है। दिव्यांग विद्यार्थियों में अनन्त सम्भावनायें, शक्ति, सामर्थ, क्षतिपूरक के रूप में विद्यमान रहती हैं। उनके समुचित उपयोग हेतु आवश्यक है कि जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रगति हेतु देश के भावी कर्णधारों को उनके 'स्व' से अवगत कराना होगा, ताकि वे सामर्थ्यनुसार उन्हें प्राप्त करने के लिए कृतसंकल्पित हों, वे सुसमायोजित हों ताकि उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण व संतुलित विकास हो। समायोजन एक उपलब्धि के रूप में किसी व्यक्ति की क्षमता की गुणवत्ता है। किसी व्यक्ति के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में अपने दायित्वों का पालन करना ही समायोजन है। समायोजन का बुरा या अच्छा होना ही उसकी उपलब्धि है। किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति सुसमायोजित व्यक्तियों पर निर्भर करती है। एक अच्छे समायोजन का तात्पर्य शारीरिक स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, कार्य प्रभावशीलता, सामाजिक स्वीकृति के साथ कार्य करना है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षक की भूमिकाः शिक्षक शैक्षणिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन और शिक्षा के आयोजन के लिए एक मुख्य साध ान है। इसलिए विद्यालय की समस्त गतिविधियों में शिक्षक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। यद्यपित शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम तथा विद्यालय का वातावरण भी शिक्षा के अंग माने जाते हैं परन्तु शिक्षक की अपेक्षा इनकी महत्ता गौण मानी जाती है। अध्यापक गौरवशाली पद का स्वामी होता है। शिक्षण एक उदात्य व्यवसाय है और मानव इतिहास की महानतम तथा श्रेष्ठतम् विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है। महान धार्मिक विचारक तथा समाज सुधारक बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, मुहम्मद साहब, महात्मा गाँधी आदि सच्चे अर्थ में मानव जाति के शिक्षक थे। इसीलिए प्राचीनकाल में गुरू (शिक्षक) को ऊँचा व प्रमुख स्थान देते हुए ईश्वर की श्रेणी में स्थापित किया गया था, परन्तु आज ऊँचे आदर्शों एवं भौतिकता की छाया में हम अध्यापक को गौण स्थान देने लगे हैं।

यह एक नितान्त सत्य है कि सम्पूर्ण शिक्षा का संचालनकर्ता, उसका वास्तविक निर्देशक, संयोजक एवं रचनाकार तथा उसे नैतिकता का स्वरूप देने वाला शिक्षक ही है। शिक्षक हर बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी क्षमताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करता है और सभ्यता की ज्योति को सदैव प्रज्जलित रखता है। शिक्षक राष्ट्र के भावी कर्णधारों के कर्णधार हैं क्योंकि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की पूर्ति पूर्णरूपेण शिक्षकों पर ही अवलम्बित होती है। इसलिए कहा गया है कि ''शिक्षा प्रणाली की कुशलता शिक्षकों पर निर्भर करती है।'' अच्छें शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा–प्रणाली का भी असफल होना अवश्यम्भावी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षक के महत्व को स्वीकार करते हुए यह कहा गया है कि किसी समाज में शिक्षकों से उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति का पता चलता है, कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है। इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुए समाज व राष्ट्र के विकास और उसके समृद्धि में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका की मान्यता स्पष्ट झलकती है।

शिक्षक के कार्यः किसी भी विद्यालय के शिक्षक उसके मेरुदण्ड के समान होते हैं। शिक्षकों की गुणवत्ता पर ही विद्यालय का अस्तित्व निर्भर करता है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का कार्य कक्षा में पढ़ाना और छात्रों को परीक्षा के लिए तैयार करना मात्र ही नहीं हैं वरन् उसे अन्य दायित्वों की भी पूर्ति करनी पड़ती है जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं–

- विद्यालय के सभी छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने का उत्तरदायित्व ग्रहण करना शिक्षक का मुख्य कर्तव्य है।
- सभी शिक्षकों को प्रधानाचार्य के नेतृत्व में एक संगठित टीम के रूप में कार्य करना चाहिए।
- समय–समय पर परस्पर मिलकर विचारों का आदान–प्रदान करते रहना चाहिए।
- सभी शिक्षकों को विद्यालय की समय–सारिणी के अनुसार कक्षाओं में शिक्षण कार्य करना चाहिए।
- अपने छात्रों की शैक्षिक एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रगति का प्रमाणिक एवं उन्नत अभिलेख रखना भी शिक्षकों का आवश्यक कार्य है।
- शिक्षकों की कोई समस्या आने पर सर्वप्रथम प्रधानाचार्य से सम्पर्क करना चाहिए। यदि समुचित समाधान न हो तो अन्य उपायों पर विचार करना चाहिए।
- शिक्षकों को छात्रों एवं निर्देशन संगठन के मध्य सम्पर्क सेतु के रूप में कार्य करना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार स्वयं भी निर्देशन देना चाहिए।
- विद्यालय के अत्यधिक कुशाग्र तथा बहुत कमजोर छात्रों के विकास के लिए शिक्षकों को विशेष विधियों को अपनाना चाहिए।
- छात्रों को खेलकूद, व्यायाम, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं, भाषणों तथा समारोह संचालन आदि के लिए भी शिक्षकों द्वारा प्रेरित किया जाना चाहिए।
- शिक्षकों के कर्तव्य है कि छात्रों में उचित मूल्यों का विकास होता रहे, ऐसी शिक्षा व्यवस्था करना चाहिए।
- समय–समय पर छात्रों में उत्पन्न विचित्र समस्याओं का समाधान भी शिक्षकों को करते रहना चाहिए।

शिक्षक विभिन्न परिस्थितियों में तथा विभिन्न सन्दर्भों में अनेक प्रकार की क्रियायें करता है। स्कूल तथा समाज के सम्बन्धों में भी अपना कर्तव्य निभाता है और इसके साथ ही साथ वह कक्षा शिक्षण भी करता है। शिक्षक की वे सभी क्रियायें जो छात्रों के व्यवहार के परिवर्तन में सहायक होती हैं। उन्हें शिक्षक– व्यवहार कहा जाता है तथा इसी प्रकार वे सभी क्रियायें जो शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण के समय की जाती हैं उन्हें शिक्षण व्यवहार कहते हैं।

म्यूएक्स तथा स्मिथ (1964), ''शिक्षक व्यवहार के अन्तर्गत शिक्षक की वे सभी क्रियायें आती हैं जो कक्षा में छात्रों के सीखने को प्रभावित करती हैं।'' कक्षा–व्यवहार में शिक्षक के लिए शाब्दिक सम्प्रेषण नितान्त आवश्यक है। कक्षा में निर्देश, कथन, व्याख्यान तथा प्रस्तुतीकरण, छात्रों की प्रशंसा आदि के लिए शिक्षक भाषा का ही प्रयोग करता है। इस प्रकार शिक्षण प्रमुख रूप में शाब्दिक व्यवहार होता है। यद्यपि शिक्षक की आँखें, हाव–भाव, शारीरिक क्रियायें आदि अशाब्दिक व्यवहार भी कक्षा में प्रभावित करते हैं और यह भी कक्षा अन्तक्रिया में कम महत्वपूर्ण नहीं होते हैं।

शिक्षक व्यवहार सामाजिक व्यवहार हैः– शिक्षक–व्यवहार को सामाजिक व्यवहार मानता है, क्योंकि शिक्षक व्यवहार के लिए शिक्षक तथा छात्रों का उपस्थिति होना आवश्यक होता है। शिक्षक व्यवहार से तात्पर्य शिक्षक

का छात्रों के साथ शाब्दिक सम्प्रेषण से है। शिक्षक और छात्रों के मध्य जो अन्तःक्रिया होती है, उसमें शिक्षक तथा छात्र दोनों की अनुक्रिया तथा स्वोपक्रम निहित होता है। दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, इस प्रकार शिक्षक व्यवहार एक समूह के मध्य ही सम्भव होता है। अतः उसको सामाजिक व्यवहार मानते हैं।

शिक्षक व्यवहार सापेक्षिक होता है—शिक्षक कक्षा में जो भी करता है, वह सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है जिसमें शिक्षक पढ़ाता है। शिक्षक व्यवहार को निरपेक्ष रूप से अच्छा या बुरा नहीं कहा जा सकता। शिक्षक व्यवहार का मूल्यांकन, छात्रों की उपलब्धि के स्वरूप, शिक्षण विषयों एवं युक्तियों का किसी सीमा तक विशेष सामाजिक मूल्यों एवं संस्कृति के मूल्यों के अनुरूपता के सन्दर्भ में किया जाता है। शिक्षक व्यवहार का निरीक्षण किया जा सकता है और उसका मापन तथा मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ रूप से किया जा सकता है। शिक्षक व्यवहार के लिए वस्तुनिष्ठ विधियाँ विकसित की जा चुकी हैं। निरीक्षण की सहायता से शिक्षक व्यवहार के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। निरीक्षण के आधार पर शिक्षक व्यवहार के प्रतिमान भी विकसित किए गये हैं जो शिक्षक व्यवहार प्रवाह के विशिष्ट स्वरूपों को प्रदर्शित करते हैं।

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। यह सत्य है कि शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालती है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर विश्व व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है हम कह सकते है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है। शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा—पद्धति दोनों में ही है। वस्तुतः शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करते हैं ऊपर राष्ट्र का उत्थान एवं पतन का भार है। समाज में शिक्षक का स्थान बहुत ऊँचा माना गया है। उनके साथ एक प्रकार की पवित्रता भी लगी हुई। शिक्षक का सम्बन्ध राष्ट्र के प्रत्येक परिवार से होता है, व्यक्तियों से राष्ट्र का निर्माण होता है और व्यक्तियों के निर्माण का बहुत सा उत्तरदायित्व शिक्षकों पर होता है। इसलिए शिक्षकों का सुशिक्षित सुयोग्य और अच्छा होना अनिवार्य है।

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता और समाज का मार्गदर्शक एवं मानव के सभ्यता संस्कृति तथा जीविकोपार्जन की स्थिति का ज्ञान कराने वाला होता है अर्थात् शिक्षक का यह कार्य होता है कि वह बालक का सर्वांगीण विकास करें। अच्छे शिक्षक समाज के लिए वरदान है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली भी उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकती है। शिक्षक समस्याओं से सम्बन्ध रखने वाली मुश्किलों का सामना करने से विचलित नहीं होते हैं। जिस ज्योति की रक्षा का भार उन्हें सौंपा गया है उसे वे जलाये रखने की कोशिश करते हैं ताकि वे उस ज्योति को मन्द किये बिना अपने उत्तराधिकारियों के हाथों में सौंप सके। हुमायुँ कबीर का कथन हैः ''शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक है''। यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है। यह शिक्षक वर्ग की योग्यता ही है जो कि निर्णायक है।''

शिक्षक प्रक्रिया आदिकाल से चली आ रही है। आदिकाल में माता—पिता ही बच्चे या छात्र के शिक्षक हुआ करते थे। वह ही सम्पूर्ण क्रियाओं सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करते थे। कालान्तर में सामाजिक दायरा बढ़ने के साथ में ही वृद्धि आरम्भ हुई, जिसमें माता—पिता के स्थान पर गुरु ज्ञान प्रदान करने लगा। ज्ञान के अत्यधिक विस्तार होने पर शिक्षा को प्रदान करने के लिए एक विशेष व्यक्ति निर्धारित होने लगा। इस प्रकार से शिक्षक की आवश्यकता महसूस हुई और शिक्षक का उदभव हुआ। प्रेम नारायण माथुर के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक ही विशेषतः जिम्मेदार होता है। इस जिम्मेदारी को पूरा करने में शैक्षणिक प्रशासन और सरकार का पूरा समर्थन मिलना चाहिए। अतः वे शिक्षा की स्वतन्त्रता को आवश्यक मानते है। ''शिक्षा वास्तव में ऐसे शिक्षक के हाथ में रहे, जिसके लिए शिक्षा जीवन की उपासना के रूप में हो।''

आदर्श शिक्षक को मनुष्य का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि सब कुछ माना गया है। कुछ विशिष्ट गुण (शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक) न तो प्रत्येक शिक्षक में मिलते हैं और न ही शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति का कार्य ही है। शिक्षण एक जगत की मानसी प्रक्रिया है, जिसमें मस्तिष्क का मस्तिष्क से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस सम्बन्ध की उपयुक्तता एवं अनुपयुक्तता बहुत कुछ शिक्षक के व्यक्तित्व पर निर्भर होती है। डा0 बैलार्ड ने कहा हैः—''भावी शिक्षक अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समझने तथा प्रत्येक में उस दीपशिखा को खोजने का प्रत्यन्त करेगा जो कि उनके व्यक्तित्व को देदीप्यमान बनाती है तथा उस शक्ति को खोजेगा, जो उनको प्रेरित करता है।'' किसी विद्वान ने कहा है कि एक अयोग्य चिकित्सक मरीज के शारीरिक हित के लिए खतरनाक है परन्तु एक अयोग्य शिक्षक राष्ट्र के लिए, इससे भी अधिक घातक है क्योंकि वह न केवल अपने छात्रों के मस्तिष्क को विकृत बनाता है वरन् उसके विकास को अवरूद्ध करता है तथा उसकी आत्मा को मरोड़ देता है इसलिए एक अच्छे शिक्षक

से यह आशा की जाती है कि वह अपने विषय का सदैव विद्यार्थी बना रहे। कहा जाता है कि अच्छे शिक्षक पैदा होते है, बनाये नहीं जाते।

अपने मन और मस्तिष्क को व्यर्थ के चिन्ता से दूर रखने के लिए समायोजन आवश्यक है। कक्षा में ध्यान की एकाग्रता बनाने के लिए समायोजन आवश्यक है, विद्यालय में भ्रातृत्व अथवा सबकी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए समायोजन आवश्यक है। व्यक्ति में समायोजन की क्रिया घर से शुरू होती है जो प्रायः जीवनपर्यन्त चलती रहती है। क्योंकि व्यक्ति के लिए यह निश्चित नहीं है कि वह पूरे जीवन में एक स्थान पर रहेगा, इसलिए वह जहाँ–जहाँ जाता है उसको उस वातावरण एवं समाज के साथ स्वयं को समायोजित करना पड़ता है। कभी–कभी व्यक्ति स्वयं अपने लिए बाधक बन जाता है और किसी अन्य कारण विश्वास को चाहते हुए भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाता जिससे उसमें मानसिक असन्तोष उत्पन्न हो जाता है। प्रायः वर्तमान परिस्थितियों जैसे घर में अधिक डांट–फटकार पड़ना, छोटी–छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति न होना, बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा का अभाव, रहने का स्थान गंदा व अस्वस्थ्यकर होना भी व्यक्ति में भग्नाशा उत्पन्न कर देते हैं जिनके परिणामस्वरूप उनके इस प्रकार के व्यवहार करने से उनकी निष्पत्ति पर प्रभाव पड़ता है। समायोजन से तात्पर्य है–''वास्तविकता के धरातल पर परिस्थितियों को अपने अनुसार ढालने की प्रक्रिया''। इस प्रकार सामंजस्य वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच शारीरिक और मनोवैज्ञानिक संतुलन तथा समता का स्तर बनाये रखता है। ''समायोजन जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने तथा वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहारों में परिवर्तन करता है।''–गेट्स

समस्या कथन

परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

- **परम्परागतः** विद्यालय वे संस्था हैं जिसको सभ्य मनुष्य के द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित और योग्य सदस्यों के लिये बालकों को तैयार करने में सहायता मिले। विद्यालय बालक के विकास के लिये विशेष वातावरण तैयार करने का प्रयास करता है वातावरण में पवित्र भावों का सृजन होता है। उनके व्यक्तित्व में संतुलन उत्पन्न होता है।
- **दूरस्थ शिक्षाः** कम्प्यूटर तथा इण्टरनेट की मदद से आज दूरस्थ स्थित व्यक्तियों, संस्थानों, समुदायों तक पहुँच काफी तीव्र व आसान हो गयी है। ई–मेल, आडियो कांफ्रेंसिंग, वीडियो कांफ्रेंसिंग, वेब कांफ्रेंसिंग इत्यादि सेवाएं सस्ती, सर्वसुलभ एवं लोकप्रिय हो गयी है, तथा आम जनमानस तथा दूरस्थ विद्यार्थी आज दूरसंचार प्रौद्योगिकियों का बखूबी इस्तेमाल कर रहे हैं।

घ्बी.एड. प्रशिक्षुः ऐसे शिक्षार्थी जो स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् शिक्षण कार्य करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे होते हैं, उसके पश्चात् विद्यार्थियों को एक शिक्षक के रूप में मान्यता प्राप्त होती है तत्पश्चात ये शिक्षक शिक्षण कार्य करने के योग्य हो जाते हैं।

- शिक्षण दक्षताः शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् किसी भी शिक्षार्थी में शिक्षण कार्य करने की कितनी क्षमता का विकास हुआ है, वही उस विद्यार्थी की शिक्षण दक्षता कहलाती है।
- समायोजन योग्यताः समायोजन से तात्पर्य वास्तविकता के धरातल पर विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं ढालने की प्रक्रिया है। समायोजन एक अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अन्दर उपस्थित गुणों को संगठित कर अपने जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करता है जो व्यक्ति स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढालकर सामंजस्य स्थापित कर लेता है, वह व्यक्ति अपनी योग्यता व उपलब्धि का सही प्रदर्शन कर पाता है। कॉलमैन के अनुसार– ''समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाईयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।'' परिस्थितियों का ज्ञान, नियंत्रण तथा अनुकूल आचरण, सन्तुलन, पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना, समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान, सन्तुष्टि एवं सुख, सामाजिकता, आदर्श चरित्र, संवेगात्मक रूप से युक्त। समायोजित व्यक्ति वह जिसकी आवश्यकताओं एवं तृष्टि सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित हो।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता का अध्ययन करना।
4. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता का अध्ययन करना।
5. परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध में अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्न हैं–

1. परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4 दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

(क) अभिवृत्ति से सम्बन्धित शोधकार्य

श्रीवास्तव, प्रियम (2011) ने नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसमें उन्होंने कानपुर नगर के केन्द्रीय एवं नवोदय विद्यालय की शिक्षिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में पाया गया कि नवोदय एवं केन्द्रीय विद्यालय की शिक्षिकाओं की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ऊषा देवी (2015) ने माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता एवं शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता एवं शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना था जिसमें पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता एवं शिक्षण अभिवृत्ति में कोई अन्तर नही होता है। सारस्वत (2019) ने ''उदयपुर जिले के उच्च मा. विद्यालयों के अध्यापको ंऔर विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति का अध्ययन'' किया जिसका उद्देश्य चयनित समूहों की पर्यावरण समस्याओं के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु उदयपुर जिले के 13 खण्ड और 6 तहसीलों को स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श द्वारा चयनित किया गया। 140 अध्यापकों, 800 विद्यार्थियों के साथ 12 विद्यालयों को चयनित किया गया। न्यादर्श में बालकों के अभिभावकों को भी सम्मिलित किया गया। समस्या के अध्ययन हेतु अभिवृत्ति मापनी, जागरूकता मापनी, उपलब्धि परीक्षण उपकरणों का प्रयोग किया गया एवं शोधकर्त्ता द्वारा साक्षात्कार मापनी का विकास किया गया। एकत्रित न्यादर्श का माध्य, मानकविचलन, टी–परीक्षण और सहसम्बन्ध द्वारा परिक्षित किया गया। रवीन्द्र (2020) में हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति की तुलना पर आधारित है। इस अध्ययन में यह निष्कर्ष लाया कि हिन्दी माध्यम के छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति अंग्रेजी माध्यम के छात्रों से अधिक होती है ऐसे में अध्ययन दिशा निर्देशन करता है कि वर्तमान में हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों का विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति में पर्याप्त सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। यह अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति आवृत्ति ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये अनुसंधान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉमेर्टिव सर्वे मैथर्ड ऑफ रिसर्च) का प्रयोग किया है।

(ख) समायोजन से सम्बन्धित शोधकार्य

डेव एवं कुलश्रेष्ठ (2014), "ए स्टडी ऑफ पर्सनल, प्रोफेशनल एण्ड सोशल एडजस्टमेंट ऑफ द टीचर्स वर्किंग इन प्राइमरी स्कूल्स इन आगरा डिस्ट्रिक" प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तिगत, व्यावसायिक तथा सामाजिक समायोजन एवं शहरी व ग्रामीण शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु आगरा जनपद के कुल 187 प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में आकस्मिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयनित किया गया। जिसमें 85 ग्रामीण तथा 102 शहरी विद्यालयों के शिक्षक थे। अध्ययन हेतु मंगल (1982) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत मंगल टीचर्स एडजस्टमेंट इन्वेटरी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त मध्यमानों से ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का सामाजिक जीवन समायोजन उच्च तथा व्यावसायिक समायोजन न्यून है। अन्य क्षेत्रों में अधिकांश प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों का समायोजन औसत स्तर का पाया गया। शहरी शिक्षकों का सामाजिक समायोजन निम्न तथा व्यावसायिक समायोजन उच्च रहा, जबकि ग्रामीण अंचल के शिक्षकों का सामाजिक समायोजन उच्च, व्यक्तिगत समायोजन बेहतर तथा व्यावसायिक समायोजन निम्न पाया गया। शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन मानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। कोविंद, रामनाथ (2020) भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 24 सितम्बर को राष्ट्रीय भवन, नई दिल्ली से 2018–19 के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के पुरस्कारों को वर्चुअल तरीके से प्रदान किया। राष्ट्रीय सेवा योजना छः पुरस्कार 3 अलग–अलग श्रेणियों में 42 विजेताओं को प्रदान किये गये हैं। महामहिम राष्ट्रपति जी ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि मानवता एवं राष्ट्र की सेवा हमारी मूल्य व्यवस्था परम्परागत ही है। राष्ट्रपति जी ने कहा हमारी परम्परा में इसकी जड़े गहरी हैं, जहाँ यह कहा गया है कि सेवाओं के उद्देश्य निहितार्थ को समझना कठिन है। किरेन रिजिजू (2021) ने इस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए (केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेलमंत्री) ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के इस पुरस्कार वितरण में हम कार्यक्रम समन्वयक को उनकी उत्कृष्ट सामुदायिक सेवाओं के लिए सराहना करते हैं। श्री रिजिजू ने कहा कि कोविड–19 वैश्विक महामारी के इस चुनौतीपूर्ण समय में राष्ट्रीय सेवा योजना के हमारे स्वयंसेवकों ने इस वैश्विक महामारी की रोकथाम के लिए अनुकरणीय सेवा प्रदान की। इस प्रकार प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित दर्शाये गये उपरोक्त समस्त शोध कार्य इस शोधकार्य से बिल्कुल भिन्न है इन शोधकार्यों की समस्या, विषय–वस्तु तथा लक्ष्य प्रस्तुत शोधकार्य से भिन्न है परन्तु फिर भी शोध समन्वय की तुलनात्मक दृष्टि से उनका अध्ययन एवं प्रस्तुतीकरण आवश्यक रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य अपने आप में मौलिक है।

शोध विधिः प्रस्तुत शोध के क्षेत्र व रूप को देखते हुए शोध पत्र में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाया है। वर्णनात्मक अनुसंधान का सम्बन्ध केवल तथ्यों को एकत्र करने मात्र से ही नहीं हैं, अपितु विभिन्न चरों में सम्बन्ध ढूढ़ना एवं भविष्यवाणी करना भी इसका कार्य होता है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चरः

- स्वतंत्र चरः लिंग (बी.एड. प्रशिक्षु शिक्षक / शिक्षिकायें)
- आश्रित चर– अभिवृत्ति एवं समायोजन
- नियंत्रित चर– प्रशिक्षण महाविद्यालय

शोध जनसंख्या एवं प्रतिदर्श–शोध में जनसंख्या का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है। प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध बी.एड. प्रशिक्षु महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

न्यादर्शः किसी भी शोध कार्य के लिए सम्पूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन करना कठिन होता है। इसलिए शोधा जनसंख्या में से कुछ प्रतिनिधि न्यादर्श का चयन कर लिया जाता है। न्यादर्श चयन के लिए अनेक विधियों एवं प्रारूपों का विकास किया गया है। सामान्य रूप से यादृच्छिक विधि, गुच्छ विधि, क्रमबद्ध न्यादर्श, सोद्देश्य न्यादर्श, आकस्मिक न्यादर्श आदि प्रमुख हैं।

उपकरणः शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापन के लिए डॉ. एस.पी. अहलूवालिया द्वारा प्रमाणित टीचिंग इन्वेन्ट्री तथा समायोजन के मापन के लिए डॉ0 ए0के0पी0 सिन्हा (पटना) व डॉ0 आर0पी0 सिंह (पटना) द्वारा निर्मित प्रमापीकृत ''एडजेस्टमेन्ट इन्वेटरी टेस्ट का प्रयोग किया गया है।''

सांख्यिकीय विधियाँः शोध पत्र में शोधार्थी ने प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए अग्रलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1ः परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–1

वर्ग	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05)
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षक	25	63.56	7.1	0.46	2.95	सार्थक
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षिकायें	25	64.92	8.77			

व्याख्या–उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की परम्परागत शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 63.56 व 64.92 है तथा मानक विचलन क्रमशः 7.1 व 8.77 है। दोनों समूहों के मानक त्रुटियों का अन्तर 0.46 है। इस प्रकार की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज अनुपात ज्ञात किया गया। क्रमशः 48 कि पर अन्तर की सार्थकता अनुपात ज का मान 2.95 का मान 0.05 स्तर के मान 2.01 से अधिक है। इसलिए ज का मान सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उपर्युक्त निष्पत्ति के आधार पर अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना–2ः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–2

वर्ग	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05)
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षक	25	65	8.29	0.43	5.50	सार्थक
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षिकायें	25	67.4	6.95			

व्याख्या–उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की दूरस्थ शिक्षा के प्रति शिक्षण अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 65 व 67.4 है तथा मानक विचलन क्रमशः 8.29 व 6.95 है। दोनों समूहों के मानक त्रुटियों का अन्तर 0.43 है। इस प्रकार की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज अनुपात ज्ञात किया गया। क्रमशः 48 df पर अन्तर की सार्थकता अनुपात ज का मान 5.50 का मान 0.05 स्तर के मान 2.01 से अधिक है। इसलिए ज का मान सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उपर्युक्त निष्पत्ति के आधार पर अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की दूरस्थ शिक्षा के प्रति शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना–3ः परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–3

वर्ग	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05)
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षक	25	65	8.38	2.49	0.57	असार्थक
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षिकायें	25	63.56	9.28			

व्याख्या–उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की समायोजन योग्यता के अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 65 व 63.56 है तथा मानक विचलन क्रमशः 8.38 व 9.28 है। दोनों समूहों के मानक त्रुटियों का अन्तर 2.49 है। इस प्रकार की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज अनुपात ज्ञात किया गया। क्रमशः 48 कि पर अन्तर की सार्थकता अनुपात ज का मान 0.57 का मान 0.05 स्तर के मान 2.01 से कम है। इसलिए ज का मान सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना उपर्युक्त निष्पत्ति के आधार पर स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं का संस्था के प्रति समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना–4ः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक

अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–4

वर्ग	प्रतिदर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05)
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षक	25	67.4	6.95	2.31	1.07	सार्थक
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षिकायें	25	64.92	9.25			

व्याख्या–उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं का दूरस्थ शिक्षण प्रणाली का संस्था के प्रति समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 67.4 व 64.92 है तथा मानक विचलन क्रमशः 6.95 व 9.25 है। दोनों समूहों के मानक त्रुटियों का अन्तर 2.31 है। इस प्रकार की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज अनुपात ज्ञात किया गया। क्रमशः 48 df पर अन्तर की सार्थकता अनुपात ज का मान 1.07 का मान 0.05 स्तर के मान 2.01 से अधिक है। इसलिए ज का मान सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उपर्युक्त निष्पत्ति के आधार पर अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना–5ः परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारणी संख्या–5

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05)
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षक	50	64.28	8.60	1.66	1.13	असार्थक
बी.एड प्रशिक्षु शिक्षिकायें	50	66.16	8.08			

व्याख्या–उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं का परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन योग्यता के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 64.28 व 66.16 है तथा मानक विचलन क्रमशः 8.60 व 8.08 है। दोनों समूहों के मानक त्रुटियों का अन्तर 1.66 है। इस प्रकार की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज अनुपात ज्ञात किया गया। क्रमशः 98 कि पर अन्तर की सार्थकता अनुपात ज का मान 1.13 का मान 0.05 स्तर के मान 1.98 से कम है। इसलिए ज का मान सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना उपर्युक्त निष्पत्ति के आधार पर स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं का परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

1. परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 2.95 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के df 48 के आवश्यक मान 2.01 से अधिक है। अतः ज का मान सार्थक है। इसलिए बी.एड. प्रशिक्षुओं की परम्परागत शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अतैव शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 5.50 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के df 48 के आवश्यक मान 2.01 से अधिक है। अतः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अतैव शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
3. परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.57 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के df 48 के आवश्यक मान 2.01 से कम है। अतः परम्परागत शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतैव शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
4. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 1.07 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के df 48 के आवश्यक मान 2.01 से अधिक है। अतः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की उनके समायोजन योग्यता में सार्थक अन्तर है। अतैव शून्य

परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

5. परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके समायोजन योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतैव शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ

1. दुन्खे, ए0 आर0 (2017), प्राथमिक शिक्षा मे अन्वेषण की आवश्यकता : एक अन्वेषणात्मक अध्ययन, शोध पत्र, नवनिकष, ज्ञानोदय प्रकाशन, जी.टी. रोड रामा देवी, कानपुर, पृ0–28–30।
2. जेड0ए0 चौबे और नीना गुप्ता (2019), बी0एड0 छात्रों की शिक्षण दक्षता एवं अभिवृत्ति की उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा शिक्षण एवं अभिवृत्ति को उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति सम्बन्ध का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, जगतगुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश।
3. गोयल, जे0 सी0 (2020), भारत में शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य–संतुष्टि, समायोजन, दृष्टिकोण और व्यवसायिक रूचि के सम्बन्ध में अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
4. गुप्ता, एस0पी0 (1998), ''आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान'', इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पेज नं0–5
5. गुप्ता, मधु एवं गुप्ता, पंकज (1999). ''विद्यालय वातावरण और शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका विद्या भारती से मान्यता प्राप्त पेंज नं0 48।
6. गुप्ता, शिप्रा एवं शान्ति (2017), शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनकी कार्य क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. भटनागर, आर0पी0 (1995).''शिक्षा अनुसंधान'' मेरठः ईगल बुक्स इण्टरनेशनल, पृ0–44।
8. मुखर्जी, श्रीमती संध्या (1988), ''विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षण'' लखनऊ : प्रकाशन केन्द्र, रेलवे क्रांसिग सीतापुर रोड, पृ0–105।
9. मुछाल एवं चन्द (2016), बी0पी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
10. शर्मा डॉ0 आर0ए0 (2009), शिक्षा तकनीकी के तत्व प्रबन्ध, आर0 लाल बुक डिपों निकट गवर्नमेण्ट इण्टर कालेज, संस्करण, पृ0 सं0–530–531।
11. सिंह, दीप्ति (2018), शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
12. पासी और शर्मा (2019), ने माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर अध्ययन, शोध प्रत्र, एकेडेमिक सोशल रिसर्च, वाल्यूम–3, पार्ट–2, कानपुर, पृ0 44–48।
13. श्रीवास्तव, डॉ0 मयंक (2007), ''विद्यालयी वातावरण पर प्रशासन पद्धति के प्रभाव का अध्ययन'', परीक्षा नियंत्रक रघुनाथपुर सीधी मध्य प्रदेश, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वाल्यूम 26 जनवरी–जून 2007 पेज नं0 27।
14. संत, विजय (2007), ''स्नातक स्तर पर छात्र और छात्राओं के अध्ययन की आदतों एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वाल्यूम 26 नम्बर 2 जुलाई–दिसम्बर पेज नं0 60
15. सुखिया, एस0पी0 (2001), ''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0–65।

Cite this Article

***'रीता यादव; शरद कुमार यादव'*, "*परम्परागत तथा दूरस्थ शिक्षा द्वारा बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन*"**, Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:1, January 2026.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

“Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author.”